Special Issue Vol-01, Oct. To Dec.2020

Vidyawarta®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

MAHMUL/03651/2012
ISSN-2319 9318

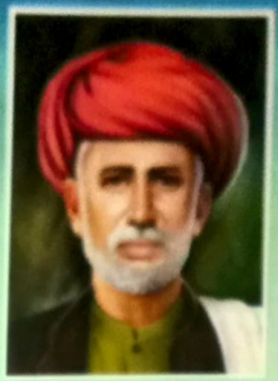

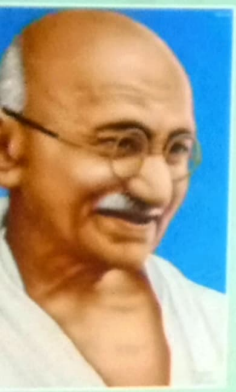

आधुनिक हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि

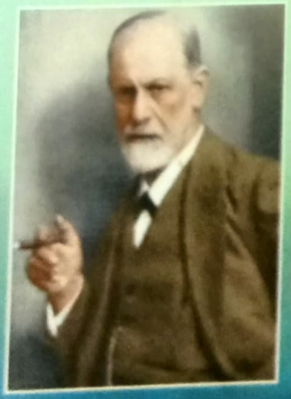

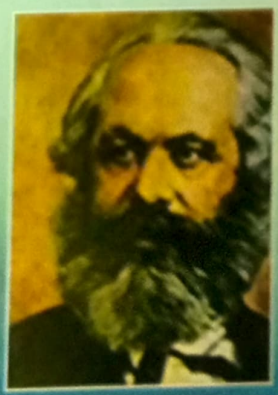

संपादक
प्रा. व्ही. एच. वाघमारे

सहसंपादक
प्रा. एस. जे. पाटील

MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

आधुनिक हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि

संपादक

प्रा. व्ही. एच. वाघमारे

सहसंपादक

प्रा. एस. जे. पाटील

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

अनुक्रमणिका

01) आंबेडकरवाद
डॉ. संघप्रकाश दुड्डे, सोलापुर ||15

02) आधुनिक युग में हिंदी साहित्य का विज्ञापन एवम् उपभोक्ताओं का बर्ताव
प्रा. सुरवसे आबाराव प्रेमनाथ, अक्कलकोट ||16

03) मार्क्सवाद आणि मराठी साहित्य
डॉ.अशोक गौरीशंकर माळगे, अक्कलकोट ||19

04) क्रांतिसुर्य समाज सुधारक ज्योतिबा फुले
डॉ. सुब्राव नामदेव जाधव, बार्शी ||23

05) महान समाज सुधारक डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर
प्रा. विठ्ठल हरिबा वाघमारे, अक्कलकोट ||25

06) कन्नड़ साहित्य में गांधीवाद
डॉ. स्वामी गुरुसिद्धय्या शिवराचय्या, अक्कलकोट ||26

07) यशपाल के उपन्यासों में मार्क्सवादी चिन्तन
प्रा.डॉ.संग्राम सोपान गायकवाड, जि.लातूर ||29

08) Gandhian Ideology in the Novel "Kanthapura" : A Study
Dr. Sachin Shesherao Ghuge & Dr. Dattatraya Mukundrao More, Dist.Latur ||31

09) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय संविधान
प्रा.डॉ. आर. डी. कांबळे, जि.कोल्हापूर ||33

10) प्रेमचन्दजी के उपन्यास कथानक में गांधीवाद का प्रभाव
प्रा. डॉ. विजय वाघ, जि. हिंगोली ||35

11) मार्क्सवाद और प्रगतिवादी काव्य
डॉ. मारोती यमुलवाड, बीड ||37

12) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर एक उत्तुंग व्यक्तीमहत्व
प्रा.डॉ. के. पी वाघमारे, जि. कोल्हापूर ||40

www.vidyawarta.com/05 http://www.printingarea.blogspot.com

13) आधुनिक हिंदी साहित्य में आंबेडकरवाद
कांबळे दिगंबर शिवा, अक्कलकोट ||43

14) हिंदी उपन्यासों में मार्क्सवादी चेतना
प्रा. सिध्दाराम पाटील, जि.-सोलापूर ||44

15) हिंदी साहित्य में गांधीवाद
प्रा. शिवानंद नडवळ ||46

16) आंबेडकरवाद आणि समान
श्री. आर. आर. कांबळे, अक्कलकोट ||48

17) जाकी जात गरी है कविता में नारी विमर्श और आंबेडकरवाद
प्रा.डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा, जि.नांदेड ||50

18) आधुनिक हिंदी साहित्य में गांधीवाद की अभिव्यक्ति (देवकीनंदन शुक्ल के उपन्यास ...
प्रा. संतोष पगार, नाशिक ||53

19) दूरांतकुमार के साहित्य में मार्क्सवादी – चिंतन
डॉ. नवनाथ गाडेकर, जेऊर (म.रेल) ||56

20) आधुनिक हिंदी साहित्य में मार्क्सवाद
डॉ. सिद्दी अनिसबेग रज्जाकबेग, औरंगाबाद ||58

21) Dr. Babasaheb Ambedkar's View on Agriculture
Dr. Kale Saudagar Damodar, Akkalkot ||61

22) दलित स्त्री आत्मकथनातील विद्रोह
प्रा.डॉ. विवेक कमलाकर खरे, नाशिक ||63

23) गांधीवाद के परिदृश्य में हिंदी साहित्य
प्रा.डॉ. शेख मुख्त्यार शेख वहाब, जि. औरंगाबाद ||67

24) गांधी विचार की आधुनिक युग में व्यावहारिक उपयोगिता
प्रा.डॉ. शेख सैबाशिरीन हारुनरशीद, औरंगाबाद ||68

25) डॉ. राममनोहर लोहियांचे हिंदी भाषाविषयक विचार
श्री देशमुख ए. एम., अक्कलकोट ||70

26) डॉ.अम्बेडकर के शैक्षिक विचार तथा हिंदी उपन्यास
प्रा. अजयकुमार कृष्णा कांबळे, जिला – कोल्हापुर ||74

27) THE RELEVANCE OF GANDHIAN THOUGHTS IN THE FIELD OF MANAGEMENT TODAY
Dr. Khandu Sambhaji Kale, Dist. Kolhapur ||77

28) मराठी साहित्यातून आलेला मार्क्सवाद संदर्भ– अण्णाभाऊसाठे
डॉ. भारत विठ्ठलराव शिंदे, पालम ||80

29) Ambedkarismin in Hindi Literature: Powering the voices of depressed class
Sagar Patel, Multai, Madhya Pradesh ||82

30) आंबेडकरवाद आणि दलित साहित्य
डॉ. सी.डी. कांबळे, जि.सोलापूर ||86

31) Savitribai Jyotirao Fule's Contribution for Women Education
Mrs.Sandhya Manoj Paranjape, Akalkot ||88

32) हिंदी कथा साहित्य पर गाँधी दर्शन एवं विचारधारा का प्रभाव
डॉ. गजेन्द्र भारद्वाज, जिला–मधुबनी, बिहार ||91

33) आधुनिक हिंदी साहित्य में अम्बेडकरवाद
डॉ. सुरेश कानडे, नाशिक, (महाराष्ट्र) ||95

34) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शेतीविषयक विचार
संध्या आत्माराम इंगळे, जि– सोलापूर ||99

35) डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर : गांधी जी भारत के प्रतीक और गांधी दर्शन
डॉ. पंडित बन्ने, जि. सोलापुर (महाराष्ट्र) ||103

36) महात्मा जोतिराव फुले यांची पर्यायी संस्कृती
डॉ. संजय बालाघाटे, पालम ||106

37) आधुनिक हिंदी साहित्य में मार्क्सवाद–उपन्यासकार यशपाल के संदर्भ में
डॉ. अशोक अंधारे, जि.नांदेड ||109

38) मार्क्सवादी उपन्यास झूठा–सच में नारी चेतना
प्रा. डॉ. गाडे ज्ञानेश्वर गंगाधरराव, जि. हिंगोली ||112

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

39) Jyotirao Phule: The Pioneer of Women's Education in India
Dr.I.M.Khairdi, Dist.Solapur ||114

40) धूमिल के काव्य में मार्क्सवादी चेतना
डॉ. बोईनवाड एन. एन., जि. उसमानाबाद ||118

41) मोहन राकेश के नाटक आधे– अधूरे में वर्णित:–मनोविश्लेषण
आसमा मकबूल सौंदलगे ||121

42) REFLECTIONS OF MARXISM IN MAXIM GORKY'S NOVEL 'MOTHER'
Mallikarjun Taterao Sonkamble, Solapur ||123

43) भारतीय समाजाचा आधार–गांधीवाद
प्रा.डॉ. थोरे किशोर धोंडीबा, जि. सोलापूर ||125

44) दिव्या उपन्यास पर मार्क्सवादी प्रभाव
डॉ. गीता संतोष यादव, नाशिक ||127

45) प्रेमचंद का साहित्य और गाँधीवाद
प्रा.डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ, जि. परभणी ||130

46) Ambedkarismin in Hindi Literature: Powering the voices of depressed class
Sagar Patel, Multai, Madhya Pradesh ||133

47) नागार्जुन के उपन्यासों में मार्क्सवादी जीवन
डॉ. रमेश आडे, ता. उमरगा ||137

48) आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यक्त गांधीवाद
प्रा. डॉ. डी. एस. गिते-मुंडे, जि. बीड [महाराष्ट्र] ||138

49) अम्बेडकरवाद साहित्य की अवधारण एवं स्वरूप
प्रा.डॉ.संगिता उप्पे, जिला लातुर ||141

50) आधुनिक हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि में मनोविश्लेषणवाद
प्रा. कविता चव्हाण, पुणे ||146

51) आधुनिक हिंदी साहित्य में मार्क्सवाद
डॉ. वीना सुमन, वाराणसी, उत्तर प्रदेश ||150

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

52) [illegible] [illegible]
[illegible]

53) [illegible] [illegible]
[illegible]

54) [illegible] [illegible]
[illegible]

55) [illegible] [illegible]
[illegible]

56) [illegible] [illegible]
[illegible]

57) Marxist Analysis of the Short Story "The Shroud" [illegible]
Dr. Sachin Sheshərao Ghuge, Dist.Latur

अम्बेडकरवादी साहित्य लेखन को नई शक्ति प्रदान की है। आज का अम्बेडकरवादी साहित्य जन-समुदाय से जुड़कर जनभाषा में क्रान्ति का बिगुल बजा रहा है।

निष्कर्ष :

अत: अम्बेडकरवाद दर्शन सामाजिक स्वतंत्रता, समानता, बंधुता, समरसता और न्याय की व्यवस्था कायम होनी चाहिए यह सिख देता है। अम्बेडकरवाद दर्शन में स्वयं अम्बेडकर ने कहा और स्वीकार भी किया है कि उनका दर्शन निर्माण और संघर्ष की प्रेरणा के पीछे गौतम बुद्ध, कबीर तथा महात्मा ज्योतिबा फुले के जीवन दर्शन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। अम्बेडकरवाद दर्शन एवं धर्म की ताकद बतलाते हुए कहते है,भारत का इतिहास यह दर्शाता है कि, यहाँ धर्म ताकत का साधन रहा है और साधु-संतों का सामान्य लोगों पर हमेशा प्रभुत्व रहा है। मॅजिस्ट्रेट से भी ज्यादा और यहाँ तक कि हड़तालों और चुनावों को भी बड़ी आसानी से धार्मिक मोड दिया जाता है

अम्बेडकरवाद दर्शन यह दुखों की अनुभूति का एहसास दलितों में एक सामान्य चेतना अपनी ऐतिहासिक गुमामी को पहचानते हैं। यदि इस प्रकार से देखा जाए तो अम्बेडकरवादी दर्शन में एक प्रकार की वर्गीय चेतना के संकेत अवश्य मिलते हैं। शोषित होने का अनुभव से उपजी अम्बेडकरवादी दर्शन के इस वर्गीय चेतना का स्वरूप कैसा है इसका परीक्षण अवश्य होना चाहिए। अम्बेडकरवादी दर्शन में सच्ची व्यावहारिक वर्ग चेतना की सच्ची शक्ति आर्थिक प्रक्रिया के विभाजनकारी लक्षणों से परे जाकर उसमें निहित समग्र समाज व्यवस्था की एकता में निहित होती है।

संदर्भ

१. राजेन्द्र मोहन भटनागर - डॉ.अम्बेडकर जीवन एवं दर्शन, पृ.३२

२. राजेन्द्र मोहन भटनागर - डॉ.अम्बेडकर जीव न एवं दर्शन, पृ.१५८

३. हिंदी-मराठी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश, Vol.३० पृ.२७

४. डॉ.रावसाहेब कसबे - आंबेडकरवाद : तत्त्व आणि व्यवहार, पृ.२०, २१

५. शरण कुमार लिंबाले - दलित साहित्य का सौदर्यशास्त्र, पृ.११

६. डॉ.रावसाहेब कसबे - आंबेडकरवाद : तत्त्व आणि व्यवहार, पृ.२०, २१

७. डॉ.यशवंत मनोहर - अम्बेडकरवादी मराठी साहित्य, पृ.५०

८. प्रा.दामोदर मोरे - अम्बेडकरवादी साहित्य विशेषांक, जुलाई - २००४, पृ.०६

९. डॉ.तेजसिंह-अपेक्षा पत्रिका, अम्बेडकरवादी साहित्य विशेषांक, जुलाई - २००४,पृ.०६

50

आधुनिक हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि में मनोविश्लेषणवाद

प्रा. कविता चव्हाण

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

टिकाराम जगन्नाथ कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय खडकी, पुणे

साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध होता है। साहित्य समाज का दर्पण बनकर कभी उसकी अच्छाईयों कभी उसकी बुराईयों का प्रतिबिंब दिखाता है और कभी समाज का मार्गदर्शन करते हुए बुराइयों से संघर्ष करने की प्रेरणा भी मनुष्य को देता है। जो समाज में घटित होता है उसे साहित्यकार देखता है, सुनता है, जो अनुभव करता है उसे अपनी लेखनी के द्वारा अभिव्यक्ति देने का प्रयास करता है। अत: साहित्यकार समाज का वास्तविक चित्रण करने का आदि है।

हिंदी साहित्य की बात हम करें तो वह अपने आप में विस्तृत ज्ञान का भंडार है। हिंदी साहित्य में आधुनिक युग की शुरूवात आ. रामचंद्र शुक्लके वि. सं. १९०० यानी सन १८४३ ईसवी से मानते है। १८५७ में हुए भारत के प्रथत स्वतत्रता संग्रामने देश में एक नई चेतना को जन्म दिया। बढ़ता औद्योगिकीकरण, संचार साधनों में वृध्दि और नई अर्थव्यवस्थाने भारत को नवीनता और गति प्रदान की। अत: समाज ने इसे पश्चिमीकरण न कहकर आधुनिकीकरण कहकर संबोधित किया। आधुनिकीकरण एक दृष्टिकोण है जो वैज्ञानिक सोच से बनता है। जैसे मैंने उपर कहा है कि साहित्य समाज का दर्पण है इसी उक्तिनुसार बढ़ता औद्योगिकीकरण, पाश्चात्य संस्कृति का समाज पर पड़ रहा प्रभाव हमें स्पष्ट रूप से तत्कालीन साहित्य में देखने को मिलता है। आधुनिक युग में साहित्य में

विभिन्न प्रकार के वाद आए। जैसे प्रगतिवाद, छायावाद, प्रयोगवाद, मार्क्सवाद, गांधीवाद, अस्तित्ववाद और मनोविश्लेषणवाद! इनमें से आधुनिक हिंदी साहित्य में मनोविश्लेषणवाद का आरंभ कैसे हुवा ये हम विस्तृत रूप मे जानते है।

मनोविश्लेषणवाद मानव मन की आंतरिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करनेवाली आधुनिक अध्ययन पध्दति है। मनोविश्लेषणवाद मस्तिष्क के चेतन और अवचेतन भाग कर उसमें अवचेतन मन को विशेष महत्व देता है। यही अवचेतन हमारे कार्यव्यापरों का सारे नैतिक आचारों का निर्माता और नियन्ता है। मनोविश्लेषणवाद के जनक 'फ्रायड', 'एडलर' और 'युंग' है। 'फ्रायड' ने मनोविश्लेषणवाद को स्पष्ट करते हुए कहा है कि मनुष्य के मानस में अवचेतना का अंश अधिक होता है और चेतना का अंश तुलनात्मक रूप से कम। मनुष्य की मूल प्रवृत्ति का कोश अवचेतन मन है। समाज और संस्कृति का प्रभाव मनुष्य के चेतन पर पड़ता है। अत: वह अपने अवचेतन मन की वृत्तियों को दमन करता है क्योंकि अवचेतन मन की स्वीकृती असामाजिकता और संस्कृति हीनता का प्रश्न उठाती है। इसके साथ ही फ्रायडने सेक्स को महत्ता प्रदान की है। कामवासनाओंकी अतृप्ति से उत्पन्न होनेवाली कुंठाओं को लेकर ही फ्रायड के सेक्स मनोविज्ञानने प्रगति की है।

मनुष्य के मन में उत्पन्न होनवाली हीन भावना को 'एडलरने' मन की परिचालिका शक्ति कहा है। हीनता की भावना मनुष्य में अहं भाव को जगाती है और इससे परिचालित होकर वह अपने महत्व को अनुभव करने एवं कराने की आवश्यकता का अनुभव करते हुए उसी अनुरूप आचरण एवं व्यवहार करता है।

'युंग' नामक विद्वानने मनोविश्लेषणवाद को स्पष्ट करते हुए कहा है कि मनुष्य की स्मृतियों, मानसिक कार्य व्यापार को चेतन मन में एकत्रित नहीं रख पाती और वे अवचेतन मन में चली जाती है। अवचेतन मन में दमित रहनेवाली स्मृतियाँ, विचार एवं अनुभूतियाँ अहं स्वीकार नहीं कर पाता। परिणामी मनुष्य के मन में भय, मृत्यु, आशंका जैसी स्थितियाँ निर्माण होती जिसका प्रभाव इसके जीवन पर पड़ता है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में फ्रायड के कुंठावाद के आधार पर अनेक लेखकों ने मनुष्य की दमित कामवासनाओं, कुंठा, काम प्रवृत्ति, दंभ, हीनभावना, अहं आदि ग्रंथियों का चित्रण अपनी रचनाओं में किया है। हिंदी साहित्य में मनोविश्लेषणवादी रचनाएँ लिखने का सूत्रपात 'जैनेंद्र', 'अज्ञेय', और 'इलाचन्द्र जोशी' ने किया है। 'जैनेंद्र कुमार' के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक चित्रण की एक विशेष शैली दिखाई पड़ती है। उनकी ये शैली की मूल प्रवृत्ति रोमानी राग, अहं और वासना के द्वंद्व की है। उनके मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र', 'सुखदा', 'कल्याणी', 'व्यतीत' आदि का समावेश होता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री पुरूषों के पारस्परिक संबंधों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है जिस कारण उनके उपन्यास विशेष चर्चित हुए। इसके साथ ही 'पत्नी', 'खेल', 'चोर', 'जान्हवी', 'पाजेब', 'समाप्ति' आदि कहानियों में पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण उन्होंने किया है। 'परख' और 'सुनीता' जैसे उपन्यासों में पाठकों को पहली बार नए प्रकार के कथ्य का साक्षात्कार हुवा। जैनेंद्र केवल अनुकरण को कला नहीं मानते उन्ही के शब्दों में "उपन्यासों में जैसी दुनिया है वैसी ही विचित्र नहीं होती, दुनिया का कुछ उठा हुवा, उन्नत कल्पित रूप चित्रित किया जाता है। वह उपन्यास किसी काम का नहीं जो इतिहास की तरह घटनाओं का बखान कर जाता है। वह दुनिया को आगे बढ़ाने में जरा भी मदत नहीं देता।",

'सुनीता' में उन्होंने हरिप्रसन्न की अमुक्त कामवासनाजन्य मनोग्रंथी को आधार बनाया गया है। 'कल्याणी' इस उपन्यास में 'कल्याणी' का अन्त : संघर्ष है। वह पति की स्वार्थपरता पर क्षुब्ध होते हुए भी शरीर का व्यापार करती रहती है। 'त्यागपत्र' इस उपन्यास में 'मृणाल' का जीवन अतृप्ति से आरंभ होता है। यौवनागम के साथ ही उसमें प्रेम करने की भावना उत्पन्न होती है और उसे पूर्णता न मिलने के कारण उसके मन में अतृप्ति तथा कुंठा भर जाती है जो आदयन्त चलती है। वह परपुरूष को समर्पण कर देती

... को हिंदी का मनोविज्ञानिक कथा साहित्य का जन्मदाता कहे तो अत्युक्ति नही होगी। मनोविश्लेषणवादी उपन्यास लिखने मे 'सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन' (अज्ञेय) का भी प्रमुख स्थान है। 'अज्ञेय' ने उपन्यास कला को एक नया शिल्प दिया। उनके उपन्यासो मे यौन भावना प्रधान है। फ्रायड के मनोविश्लेषण के अनुसार मानव जीवन को प्रेरित करनेवाली तीन मूल शक्तियों अहं, भय और यौनवृत्ति को आधार बनाकर 'अज्ञेय' ने मनुष्य की अहम्मन्यता, आत्मरति, मुक्तभोग आदि का चित्रण प्रस्तुत किया है। इनके उपन्यसों मे कला तथा भाषा शैली, दोनो दृष्टियों से नवीन प्रयोग दिखाई पड़ते है। 'नदी के द्वीप' मे व्यक्तिवादी जीवन दर्शन हुवा है। उन्होंने इस उपन्यास मे मध्यमवर्गीय कुंठित जीवन के प्रतिक के रूप मे 'नदी के द्वीप' की कल्पना की है। जिसप्रकार 'नदी का द्वीप' धारा से कटा हुआ होता है उसीप्रकार मध्यमवर्गीय जीवन भी समाज प्रवाह से विछिन्न है। इस उपन्यास में 'रेखा' इस पात्र के द्वारा दमित कामवासना को अभिव्यक्ति दी है। अपनी वासना को शांत करने के लिए पहले वे 'भूवन' से संबंध बनाती है। किंतु इसके पश्चात 'रेखा'जैसी अत्यंत भावुक स्त्री के लिए 'भूवन' को विनाश के गत में ढकेल देना असाध्य कार्य लगता है। भुवनने उसे क्षणिक अनुभूति प्रदान कर उसके जीवन को सार्थक बनाया। इसलिए वह दूसरा विवाह करती है। यहाँ से रेखा का जीवन भावुकता का झंझावात न होकर आंधी के बाद की शांत नवरचना है। परंतु यह आगे का जीवन केवल एक समझौता है। वह भूवन को पत्र लिखकर कहती है "यह क्या है, भूवन ? बरसों में श्रीमती हेमेन्द्र कहलाई, उसके क्या अर्थ थे ? अब अगले महिने से श्रीमती रमेशचंद्र कहलाउँगी उसके भी क्या अर्थ है ? मैं इतना ही समझ पाती हूँ कि मेरे ... परंतु मानसिक तौर पर नहीं। वह दूसरे विवाह के बाद भी भूवन से प्रेम करती है। 'अपने अपने अजनबी' यह उपन्यास युरोप के परिवेश में घटित कल्पित घटनाओं पर आधारित एक असाधारण कृति है। इसमें व्यक्ति का अकेलापन, बेनामी, मृत्युबोध, अजनबीपन आदि का चित्रण हुवा है।

'शेखर एक जीवनी''अज्ञेय' का बहुचर्चित उपन्यास है जो दो भागों में विभक्त है। इस उपन्यास में दमित काम वासना–जनित आक्रमक प्रवृत्तियों को हम देख सकते हैं। स्वयं अपनी वासना को दमित रखनेवाला 'शेखर''शशि' से प्यार करते हुए भी उसके प्रति दया या सहानुभूति नहीं दिखाता। मूलत: इस उपन्यास में व्यक्ति–स्वातंत्र्य की समस्या उठाई गई है। स्वतंत्रता की खोज में शेखर अपने आंतरिक संघर्षों से झूझता है, किंतु अपने निषेधात्मक रोमांटिक विद्रोह को लेकर वह बर्हिमुखी नहीं हो पाता। अज्ञेय एक विद्रोही लेखक होने के नाते और शेखर भी एक विद्रोही पात्र होने के नाते मनोविज्ञान के सैध्दांतिक प्रभाव को नकारते भी हैं। यह निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट होता है। "प्राय: लोग संतान पर माँ के प्रभाव की बात करते हैं। बहुतों का विश्वास है कि सभी असाधारण व्यक्तित्व पर माँ का प्रभाव रहा होता है। अच्छे या बुरे उनके लिए साधारण नहीं है। वे सुलग नहीं सकते फट सकते हैं।"[३]

शेखर एक विद्रोही और आक्रमक पुरूष है और उसके मन में हजारों सवाल है, और उत्तर न मिलने के कारण उससे उत्पन्न घनिभूत वेदना और पीड़ा का वह अनुभव करता है। अज्ञेयजीने स्वयं उपन्यास के बारे में कहा है शेखर एक जीवनी घनीभूत वेदना का केवल एक रात में देखे गए 'विजन' को शब्दबध्द करने का प्रयास है। प्राय: पाठकों का मत है

कि शेखर एक जीवनी यह उपन्यास अज्ञेय की अपनी जीवनी है। इस संबंध में शेखर एक जीवनी उपन्यास की भूमिका में अज्ञेयजी खुद कहते है कि "शेखर में मेरापन कुछ अधिक है। शेखर एक व्यक्ति का अभिन्नतम दस्तावेज है, यद्यपि वह साथ ही उस व्यक्ति के युग का संघर्ष का प्रतिबिंब है।"

उपन्यास की तरह अज्ञेय की कुछ मनोवैज्ञानिक कहानियाँ चर्चित है। मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों तथा गूढ़ रहस्यों को परखने का यत्न अज्ञेयजी के कहानियों में दिखाई पड़ता है। बाह्य परिवेश में स्थित व्यक्ति का अकेलापन, घुटन आदि का सूक्ष्म तथा प्रभावी चित्रण इनकी कहानियों में मिलता है। उनकी 'विपथगा', 'परंपरा', 'कोठरी की बात', 'अमरवल्लरी' आदि कहानी संग्रह विभिन्न व्यक्तित्व का उद्घाटन करनेवाले कहानी संग्रह है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास लिखने की इस परंपरा में 'इलाचंद्र जोशी' का नाम भी उल्लेखनिय है। इनके उपन्यासों में वैयक्तिक कुंठाओं और मानसिक ग्रंथियों का चित्रण हुवा है। उन्होंने मूर्त या अमूर्त रूप से सूक्ष्म मनोभावों की विशेषकर यौनवशत्तियों की व्याख्या की है। इनके 'पर्दे की रानी', 'प्रेत और छाया' उपन्यासों में व्यक्ति चरित्रों के अवचेतन की परतों को मनोवैज्ञानिक पध्दति से उबारा है। 'संन्यासी' इस उपन्यास में 'इलाचंद्र जोशी' ने अनियंत्रित उच्छंश्खल जीवन बितानेवाले 'नन्दकिशोर' की यौनभावना को अभिव्यक्ति दी है। निर्वासित इस उपन्यास में महिप एक ही परिवार की तीन लड़कियों से प्रेम करता है किन्तु विवाह किसी से नहीं करता। जोशीजी के प्राय: सभी मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों में प्रेम और वासना की प्रचंड लीलाएँ अंकित हुई है। उनके उपन्यास के सभी पात्र कुछ विशिष्ट मनोग्रंथियों के प्रतीक बनकर पाठकों के सामने आते हैं। उपन्यास की भाँति ही 'इलाचंद्र जोशी' ने 'फ्रायड' के मनोविश्लेषण सिध्दांत का प्रयोग अपनी कहानियों में भी किया है। उनकी 'पतिव्रता या पिशाची', 'चरणों की दासी', 'रोगी', 'जारज', 'होली', 'परितक्त्या', 'अनाश्रित', 'रक्षितधन का अभिशाप', 'मैं', 'मेरी डायरी के दो नीरस पृष्ठ' आदि कहानियों में मानसिक कुंठाओं, जीवन की अन्तर्बाह्य विसंगतियों व्यक्ति की अंहवृत्ति की विभिषिका चित्रण मिलता है।

मनोविश्लेषणवादी उपन्यास परंपरा में 'धर्मवीर भारती' का का नाम भी लिया जा सकता है। उनका 'गुनाहों के देवता' में भावना और वासना में उलझा हुआ व्यक्तित्व का चित्रण मिलता है। 'डॉ. देवराज' भी इसी कोटी के उपन्यासकार है। उनके 'पथ की खोज' इस उपन्यास मध्यमवर्गीय समाज के शिक्षित सदस्यों के जीवन की समस्याओं और मान्यताओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है। उनके बाहर भीतर इस उपन्यास में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक परंपराओं एवं मान्यताओं के संघर्ष का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। 'मनोहर श्याम जोशी' का 'हमजाद' भी इसी श्रेणी के तहत आता है। 'मोहन राकेश' के 'अंधेरे बंद कमरे' में उन्होंने मानवीय संबंधों की अर्थहीनता स्त्री–पुरूष संबंध और विवाहीत जीवन की अर्थहीनता, व्यक्तिमन की छटपटाहट, तनाव घुटन, अजनबीपन आदि का चित्रण किया है। 'डॉ. नगेंद्र' ने कहा है कि "आस्थाविहीन समाज अनिश्चय की स्थिति में लटके हुए इंसान और आत्मनिर्वासन की अभिव्यक्ति देने की पहल मोहन राकेश ने अपने अंधेरे बंद कमरे में की है। इसके अनुसार प्रेम कोई शाश्वत – उदात्त मूल्य नहीं रह गया है – वैयक्तिक महत्वकांक्षाएँ और आधुनिक जीवन की सफलताएँ प्रेम की आंतरिक विवशता में दरारे पैदा कर देती है।" उषा प्रियंवदाने 'पचपन खंबे लाल दीवारें' तथा 'रूकोगी नहीं राधिका' जैसे बहुचर्चित उपन्यास लिखे है। 'रूकोगी नहीं राधिका' में 'इलेक्ट्रा' ग्रंथि से ग्रस्त एक भारतीय नारी की दुविधा को आधार बनाया गया है। 'कृष्णा सोबती' के 'सूरज मुखी अंधेरे', 'मित्रो मरजानी' इसी श्रेणी के उपन्यास है जिसमें स्त्री पुरूष की देह – संबध की वास्तविक भाषा को तलाशा है। एक दैहिक संबंध की पूर्णता से पहले की अतृप्ति के कारणों, मनोग्रंथियों को विश्लेषित करने में कृष्णा सोबती ने विश्लेषण की भाषा से बचकर अनुभव की भाषा का चुनाव किया है। बहुत कुछ यह एक निजी भाषा की निर्मिती है। 'मन्नू भंडारी' ने 'आपका बंटी' इस उपन्यास में स्त्री–पुरुष के संबंध में आते बदलाव और जटिलता का अंकन करके 'जैनेंद्र' और 'अज्ञेय' की परंपरा में अपना स्थान

ISSN: 2319 9318

बताया।

निष्कर्षत हम कह सकते है कि मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के विकास में यौन तत्व प्रमुख योग रहा है। मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार शिक्षित वर्गीय समाज में पुरूष तथा नारी के संबंध में नवीन रूप धारण करने में तो विफल रहे है। परन्तु मानसिक ग्रंथियों को पुष्ट करने में सफल हुए है। हिंदी के मनोविश्लेषणवादी साहित्य में सेक्स संबंधी कुंठाओं, दमित काम वासनाओं का चित्रण अत्यंत मार्मिक और कहीं कहीं नग्नरूप में हुवा है। इन ग्रंथियों के उद्घाटन में एवं अवचेतन मन के निरूपण में 'फ्रायड', 'एडलर', 'युंग' आदि विद्वानों के मनोवैज्ञानिक सिध्दातों का स्पष्ट तथा गहन प्रभाव आधुनिक हिंदी साहित्य पर दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ –

१) हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास – बाबू गुलाबराय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा पृ. १४६

२) हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ– डॉ. जयकिशन प्रसाद, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृ. ६७३

३) शेखर एक जीवनी – अज्ञेय, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, पृ. १२३, १२४

४) वही – भूमिका से

५) वही

६) हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र, मयूर पेपर बैक्स संस्करण, पृ. ६८४

७) उपन्यास का यथार्थ और रचनात्मक भाषा – डॉ. परमानंद श्रीवास्तव, पृ. १४८

८) मनोविश्लेषणवाद – फ्रायड

९) फ्रायड एण्ड लिट्रेचर – लोनेल ट्रिलींग

❑❑❑

51

आधुनिक हिंदी साहित्य में मार्क्सवाद

डॉ. वीना सुमन
असिस्टेन्ट प्रो., हिंदी विभाग,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

****

मार्क्सवाद ऐसा पहला समाज–दर्शन है जिसने सचेत रूप से दुनिया को बदलने के लिए उसे समझने का प्रयत्न किया। इस प्रक्रिया में जहां उसने शोषण के तमाम रूपों के बीच मौजूद अंतर्संबंध को पहचाना, वहीं मनुष्य की सांस्कृतिक गतिविधियों की विचारधारात्मक भूमिका की खोज करने का भी प्रयास किया। इस प्रक्रिया में मार्क्सवाद ने एक ऐसी आलोचना पद्धति विकसित करने का प्रयास किया जो साहित्य और समाज के रिश्ते को स्पष्ट कर सके। साहित्य के विश्लेषण की एक विशिष्ट पद्धति के रूप में मार्क्सवादी आलोचना आज दुनिया भर में स्थापित हो चुकी है। उस पर विवाद है, विद्वानों की असहमतियां है, लेकिन उसके महत्व से इनकार कर पाना असंभव है।

हिन्दी आलोचना का इतिहास जितना पुराना है, उससे कुछ ही कम पुराना हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना का इतिहास है। हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना ने सत्तर से भी अधिक वर्षों की इस अवधि के दौरान न सिर्फ कई शीर्षस्थ मार्क्सवादी आलोचक दिए हैं, बल्कि एक तरह से आलोचना के क्षेत्र में अपना वर्चस्व बनाए रखा है। इसके बावजूद उसकी स्थिति बहुत संतोषजनक नहीं कही जा सकती। हिन्दी में मौलिक सैद्धांतिक कृतियों का लगभग अभाव है. मार्क्सवादी दृष्टि से पूरे हिन्दी साहित्य का इतिहास तक नहीं लिखा जा सका है। खुद मार्क्सवादी आलोचना के पूरे इतिहास और उसमें चली बहसों का लेखा–जोखा लेने वाली कृतियों का भी अभाव है। रामविलास शर्मा और नामवर सिंह जैसे कुछ बड़े आलोचकों पर किताबें